मुबल्लिग ए हक़ व सदाक़त

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने कभी भी सदाक़त और हक़्क़ानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा चाहें कितने ही मस्लेहत के तक़ाज़े क्यों न हों हर मसले पर आप ने बेख़ौफ़ और निडर होकर जवाब दिए चाहें वो नसबंदी का मसला हो या बाबरी मस्जिद का मसला या फिर सऊदी हुकूमत के मज़ालिम हों या टाई या टीवी वीडियो का मसला हो शरीयत के मसले में आपने ज़रा सा भी हल्कापन नहीं आने दिया चाहें दुनिया नाराज़ हो जाएँ लेकिन जो शरीयत का हुक्म था आपने वही बयान किया

उलमा ए अहले सुन्नत आपके बारे में

दौर ए हाज़िर में आलाहज़रत अलेह रहमा , हुज्जतुल इस्लाम और मुफ़्ती ए आज़म के सच्चे जानशीन हुज़ूर ताजुश्शरिया मुफ़्ती ए आज़म हिन्द अल्लामा अश्शाह अख्तर रज़ा क़ादरी रज़वी बरेलवी अलेह रहमा थे (अल्लामा मौलाना सय्यद शाह इरफ़ान शाह मशहदी पाकिस्तान)

साहिब ए शरीयत मुफ़्ती मुहम्मद अख्तर रज़ा खान क़ादरी अज़हरी अलेह रहमा की ज़ात इल्मी दीनी रूहानी और समाजी खिदमात के ऐतवार से एक मिसाल थी

(सय्यद शाह फ़ज़ल ए मतीन चिश्ती गद्दी नशीन अजमेर शरीफ)

हज़रत शैख़ अल्लामा मुफ़्ती अख्तर रज़ा खान अलेह रहमा की शख्सियत आलमे इस्लाम में मरकज़ी हैसियत रखती थी आपने जामियातुर रज़ा क़ायम करके अहले सुन्नत पर एहसान अज़ीम फ़रमाया है (शैख़ अबू बक्र क़ादरी केरला)

शैख़ उल इस्लाम हज़रात अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख्तर रज़ा खान करि अज़हरी अलेह रहमा की शख्सियत मआरिफ़ ए रज़ा के लिए एक आईने की हैसियत रखती है आपको मुताद्दिद ज़बानों पर उबूर हासिल था इसवक्त आपकी मुताद्दिद तसानीफ़ मंज़र आम पर आ चुकी हैं और अपना लोहा मनवा चुकी हैं

(कंज़ुल उलमा डॉ अशरफ आसिफ जलाली पाकिस्तान)

और सैकड़ों उलमा ए अहले सुन्नत ने आपके बारे में अपनी राय पेश की हैं जो हम लिखने से क़ासिर हैं

विसाल व कमाल

आप 20 जुलाई 2018 बरोज़ जुमा मगरिब के वक़्त इस दारे फानी को छोड़कर दारे वका की तरफ कूच कर गए आपका विसाल अहले सुन्नत के लिए बहुत बड़ा ख़सारा है पूरी दुनिया खासकर मक्का और मदीना शरीफ , बगदाद शरीफ , मिश्र ,तुर्की , लंदन ,पकिस्तान ,श्रीलंका से मशाइख और उलमा ने आपके लिए ताज़ियत पेश कीऔर करोड़ो की तादाद में लोग पूरी दुनिया से आपकी नमाज़े जनाज़ा में शरीक हुए

मिन जानिब- मस्जिद कलन्दर शाह श्यामतगंज बरैली शरीफ

अख्तर ए क़ादरी खुल्द में चल दिया | खुल्द वा है हर एक क़ादरी के लिए



हुज़ूर
ताजुश्शरीया
हयात व खिदमात



नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com

वो खानदान ज़िंदा और पाइंदा वक़ार की अलामत बन जाता है जिस के वारेसीन अपने अकाबेरीन की खिदमात को ज़िंदा और पाइंदा रखते हैं याद कीजिये उस ताबनाक दौर को जब सवाद ए आज़म अहले सुन्नत व जमाअत के अकाबेरीन फितना ए वहाबिया के सामने एक मज़बूत दीवार बनकर खड़े हो गए थे

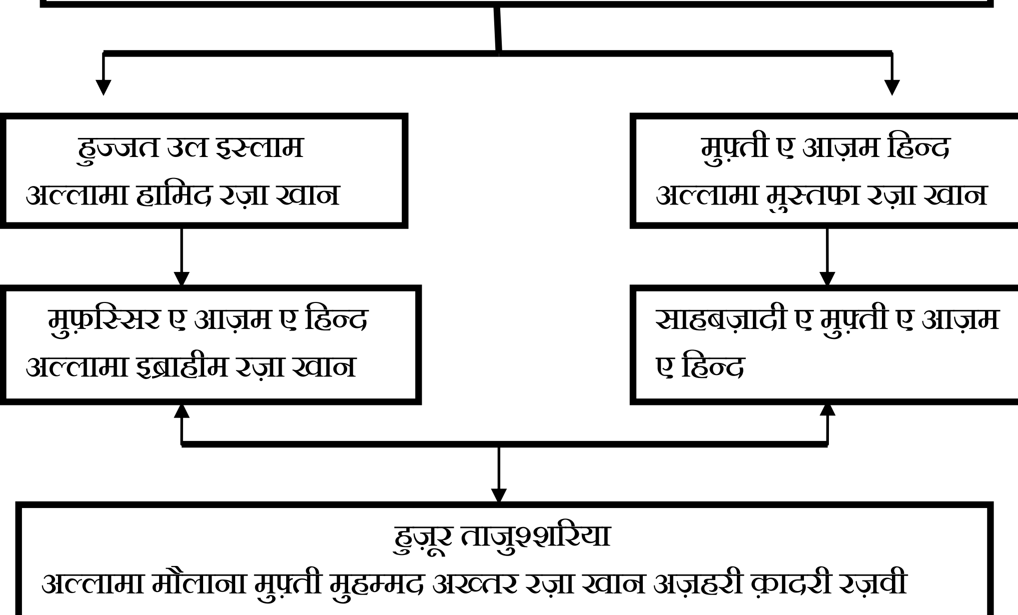
सलाम हो खानवाद ए रज़विया के उन उलमा और मशाइख को जिन्होंने इस फ़ितने से मुसलमानों को आगाह किया

उसी खानवाद ए रज़विया के एक चश्मों चिराग **हुज़ूर ताजुश्शरिया अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अख्तर रज़ा खान अज़हरी क़ादरी रज़वी** हैंआइये इनकी हयात व खिदमात के बारे में कुछ जानते हैं

विलादत व सआदत

हुज़ूर ताजुशशरिया की विलादत व सआदत 24 ज़ी क़ाद 1362 हिजरी मुताबिक़ 23 नवंबर 1943 बरोज़ मंगल के दिन काशाना ए आलाहज़रत मोहल्ला सौदागरान बरैली शरीफ में हुई 4 साल 4 माह 4 दिन की उम्र में आपके वालिद ए माजिद ने बड़े एहतिमाम के साथ रस्म ए बिस्मिल्लाह ख्वानी की तक़रीब का इनेक़ाद किया जिसमे जामिया रज़विया मंज़र ए इस्लाम के जुमला असातिज़ा व तलवा शरीक हुए

नस्ब शरीफ



तालीम

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने घर पर ही वालिदा माजिदा से क़ुरान ए पाक नाज़रा मुक़म्मल किया और वालिदे माजिद से इब्तेदाई किताबें पढ़ी उसके बाद आपने जामिया रिज़विया मंज़र ए इस्लाम में तालीम हासिल की उसके बाद सन1963 में आपके वालिद की मर्ज़ी से आपका दाखिला जामिया अज़हर काहिरा मिश्र में हो गया वहां आपने उसूल ए दीन,फन्ने तफ़्सीर व हदीस पर महारत हासिल की

आप जिस दौरान जामिया अज़हर में ज़ेरे तालीम थे उसी दौरान 1965 में आपके वालिद ए गिरामी का विसाल हो गया उस वक़्त आपके हवाले से उन्होंने बहुत क़ीमती अल्फ़ाज़ कहे थे जो आब ए ज़र से लिखे जाने के क़ाबिल हैं मुख़्तसर ये के "**अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से मेरा अख्तर अभी जामिया अज़हर में इल्म का नूर हासिल कर रहा है लेकिन वो दिन क़रीब है के वो आसमान ए इल्म व फ़ज़्ल पर चमकेगा अपने उस से रौशनी पाएंगे शयातीन की जमाअत और बदख्वा उस से दूर भागेंगे मगर वो बर्क़ ए ख़ातिफ़(बिजली) की तरह उनका पीछा करेगा**" सन 1966 में आप तालीम हासिल करके बरैली शरीफ तशरीफ़ लाये हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म ए हिन्द ब ज़ाते खुद स्टेशन पर तशरीफ़ ले गए जैसे ही आप ट्रैन से बाहर तशरीफ़ लाये मुफ़्ती ए आज़म हिन्द ने आपको गले से लगा लिया और पेशानी चूमकर बहुत दुआएं दीं और फ़रमाया "**कुछ लोग गए थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिया की तहज़ीब कुछ असर नहीं हुआ**"

(हयात ए ताजुशशरिया व हयात ए मुफ़स्सिर ए आज़म)

हज व ज़ियारत और गुस्ल ए काबा

हुज़ूर ताजुश्शरिया ने पहला हज 1403 हिजरी मुताबिक़ 4 सितम्बर 1983 में अदा किया और तक़रीबन 5 हज और अदा फरमाये और मुतअद्दिद उमरों से भी फ़ैज़याब हुए और रमजान शरीफ के हसीन अय्याम कई बार मक्का शरीफ और मदीना शरीफ में गुज़ारे

10 जून 2013 मुताबक 1 शाबान 1434 हिजरी में आप **गुस्ल ए काबा** शरीफ से फ़ैज़याब हुए जब आप काबा शरीफ में दाखिल हो रहे थे तो वहां मौजूद लोग आपके बारे में एक दुसरे से पूछ रहे थे कि ये कौन शैख़ हैं और काबा में मौजूद लोग आपको शैख़ ए कबीर(बढ़े शैख़) बोल रहे थे और दुआ के लिए गुज़ारिश कर रहे थे

(**महानामा सुन्नी दुनिया बरैली शरीफ सितम्बर** 2013 **शफा** 3 -5)

दर्स व तदरीस

1967 में आपने मंज़र ए इस्लाम में तदरीस का आगाज़ किया 1978 में आप सदर उल मुदर्रिसीन के ओहदे पर फ़ाइज़ हुए 1982 से आपने दर्स ए क़ुरआन और दर्स ए हदीस का सिलसिला जारी किया जिससे दनिया भर के उलमा ने इस्तिफ़ादा किया